वार्षिक मूल्य 50 रूपये

# धर्म जीवन

मई – 2018


* अद्वितीय सत्गुरू की अद्वितीय दिनचर्या
* अज्ञात अन्धेरे
* भगवान देवात्मा के देवरूप पर चिन्तन
* बरकतें लाभ करने का अधिकार पाना एक बात है
* भगवान व धर्म
* सत्संग में बैठकर
* कल्याण सत्संग

# अद्वितीय सत्गुरू की अद्वितीय दिनचर्या

(भगवान अपने वचन के पूर्ण पाबंद थे)

यह नहीं था कि भगवान केवल उनके लिए सच्चे थे, जो स्वंय अपनी प्रतिज्ञा वा वायदे के लिए सच्चे थे। लेकिन वह इस लिए सच्चे थे क्योंकि उनकी प्रकृति ही सत्य अनुरागी थी।

यहां पर उनके जीवन की दो घटनाएं दे रहे हैं, जो उनकी अद्वितीय प्रकृति का परिचय देती हैं।

27- कनल जी लिखते हैं (उस समय) कि एक वर्ष पहले, जब गुरू महाराज ईश्वर में विश्वास रखते थे। उन्होंने स्त्रियों के लिए एक व्याख़्यान देना था, यह स्थान उनके निवास स्थान से एक मील के लगभग दूर था। एक ईतवार को, मूलसलाधार वर्षा हो रही थी। कई स्थानों पर 6-6 ईच तक गलियों में पानी आ गया था, कई स्थानों पर तकरीबन घुटनों तक पानी था। यह विश्वास ही था कि ऐसे बुरे मौसम में स्त्रियां व्याख्यान सुनने नहीं आएंगी। पारिवारिक जनों ने भगवान से प्रार्थना की कि वह इस मौसम में न जाएं। परन्तु भगवान ने जोश से भरकर कहा, "सोचो, अगर एक औरत भी वहां आई तो मैं अपने कर्तव्य में फेल नहीं हो जाऊंगा? मेरा क्या कर्तव्य है? और बात सोचने से पहले मुझे वह करने दो।" इस हालात में भगवान वहां गए। वहां कोई भी स्त्री नहीं आई थी, परन्तु भगवान देवात्मा ने उस घर में जो लोग रहते थे, उन्हें बुलाकर उन्हें उपदेश दिया।

28- 1915 के महोत्सव पर श्रीमती केसर बाई और उनके परिवार ने भगवान के दर्शन की इच्छा ज़ाहिर की और समय मांगा। ढाई बजे का समय निश्चित हुआ। भगवान को याद था कि उनका नाई उस समय तक आकर चला जाएगा। क्योंकि अकसर वह समय पर आ जाता है। उन्होंने उसी समय उनको सन्देश भेजा कि यदि नाई के आकर जाने में कुछ समय लगता है, तो उन्हें कुछ इन्तजार करनी पड़ सकती है। जब वह स्त्री अपने परिवार सहित आई, तो भगवान ने झट से पूछा कि क्या आपको मेरा सन्द्रश मिल गया था। कि नाई के जाने में कुछ देरी हो सकती है। उन्होंने हां में जवाब दिया। भगवान देवात्मा की यह अद्वितीय खूबी (Trait) उन लोगों के लिए भी उतना ही मायने रखता था, जिन्हें समय की कोई कीमत नहीं होती। इस प्रकार भगवान देवात्मा अपने सेवकों के भीतर भी इस खूबी को पैदा करना चाहते थे।

---

याद रखो कि अन्यायपूर्ण अलोचना अकसर एक छुपा हुआ Compliment है।
याद रखो कि मरे हुए कुत्ते को कोई ठोकर नहीं मारता।

डाक्टर सैनुअल जोनसन

# धर्म जीवन

खण्ड 31 अंक 5
मई – 2018
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़


## अज्ञात अन्धेरे

जिस दिन सर्दी के मौसम में गहरी धुंध पड़ती है उस दिन सुबह तक कुछ दिखाई नहीं देता। काफी दिन चढ़ आने पर भी अंधेरा छाया रहता है। यहां तक कि रेलगाड़ी के ईंजन की जोरदार रोशनी रेल मार्ग को, बसों ट्रकों आदि की लाईटस सड़कों को रोशन करने में असमर्थ दिखाई देती हैं। गरही धुन्ध का अंधेरा, रात के घोर अंधकार से भी बढ़ जाता है। रेल वाले उस दिन सिगनिल का काम पटरी पर पटाखे रखकर करते हैं। सिगनल भी दिखाई नहीं देते। पटाखे फूटने से रेल ड्राईवर को पता लग जाता है कि सिगनल हुआ है और वह रेल को आगे ले जाता है।

रात के गहन अन्धेरे को सब देखते हैं, परन्तु कुछ ऐसे अंधेरे हैं कि जो दिन दिहाड़े, सूर्य चमकते, आंखें रखकर विद्या और बुद्धि रखकर दिखाई नहीं देते, उनका मनुष्य को पता भी नहीं लगता, अधिकतर जन इससे अंजान रहकर ही जीवन गुजार देते है। आओ, हम इन अंधेरों को कुछ समझने का यत्न करें। हमारे हृदयों में अंधेरा भरा हुआ है। हमें वह अंधकार बिल्कुल दिखाई नहीं देता। इस हृदय के अंधकार में हमें बड़े बड़े गुणवान, महापुरुषों के सुन्दर जीवन दिखाई नहीं देते, यहां तक कि अपना परिवार भी अकसर अपने ही महान व्यक्ति की महानता को पहचान नहीं सकता। ऋृषि जी शिव दयाल सिंह जी के अति महान जीवन को गुरू महाराज ने तो देखा, पर उनके परिवारिक जनों ने या रूड़की कालिज के जनों ने कुछ नहीं देखा। ऋृषि जी के सारे परिवार में से एक बजुरग थे जो उन्हें देखते थे, केवल वही कहते थे कि हमारे घर में तो वली पैदा हुआ है, परन्तु यह कहने पर भी दूसरे जनों को उनकी कोई महानता नज़र नहीं आती थी। नानक जी को अकेले भाई लहिणा जी ने पहचाना, बाकी सब छोड़कर भाग गए थे।

हमें अपने माता पिता, बहन भाई, पति पत्नि के गुण नज़र नहीं आते, यदि कभी गुणों का बखान करते हैं तो वह भी अपने को बड़ा बनाने के लिए, उनको महान देखने के लिए नहीं, यही अंधकार है जो हमारे हृदयों में पसरा पड़ा है।

गुरू महाराज ने सारे मनुष्यमात्र की ओर संकेत करके फरमाया था कि "मैं अज्ञात हूं, मैं अनादृत हूं, मैं सन्तप्त हूं, मैं परित्यक्त हूं" मनुष्यात्माओं का हृदय का अंधकार देवात्मा को देखने ही नहीं देता। साधारणत: जब महा पुरुष इस दुनिया से चले जाते हैं, तो दुनिया उनको पहचानने लगती है। जान आफ आर्क को पहले जिन्दा जला दिया, फिर उसे एक देवी समझकर 200 वर्ष बाद सेंट का विशेषण

देकर सम्मानित किया। लिंकन को गोली मार दी, सुकरात को विष देकर मारा, अब सारा संसार उनकी पूजा करता है। यह सब मानव हृदय के अंधकार के लक्षण हैं। इस अंधकार में मनुष्य झूठमूठ अपने को महान देखता रहता है, दूसरों की महानता सारी उम्र उसकी आंखों से ओझल रहती है।

हृदय में इस अंधकार के कारण हमें अपने ऊपर हुए उपकार नज़र नहीं आते। हम पर जान न्यौछावर करने वाले हमें बिल्कुल ही भूले रहते हैं। उपकारियों के उपकारी रूप की सुंदरता देखने में असमर्थ होते जाते हैं। यह अंधकार कृतघ्न वा नाशुकरा बनने में कोई रोक लगने नहीं देता। हमें अपना स्वार्थ प्यारा है, अपना स्वार्थ पूरा होने के बाद उपकारियों का कोई मतलब हमारी जिन्दगी में नहीं रहता। यदि इस अंधकार से हमारे हृदय भरे हुए न होते तो हमारे हाथों माताओं का तिरस्कार न होता। पिताओं का निरादर न होता, वह रुलते, रोते दिखाई न देते। कोई अध्यापिका, कोई डाक्टर और अन्य उपकार करने वाले निराशा वा हृदय की तड़पन में जीवन व्यतीत न करते। पत्नियों पर जुल्म न होते। पति पत्नियों का त्याग वा बिछड़ना न होता। अंधेरा न होता तो उच्च स्थान रखने के अधिकारियों को पैरों में रुलाया न जाता, उन्हें उचित सम्मान मिलता, इस विश्व के यह दर्दनाक नज़ारे हमारे भीतर के अंधेरे के कारण हैं।

उच्च भावों के अभाव में हृदयों में अंधेरा बढ़ता है। साधारणत: मनुष्य को दूसरों के अभाव दिखाई नहीं देते। अपनी ही पीड़ा को मनुष्य अनुभव करता है। इसीलिए यह कहावत है कि जिसको जूता काटता है, वह पहनने वाला ही उस पीड़ा को अनुभव कर सकता है। सड़कों पर हुई दुर्घटनाओं को देखकर मनुष्य गुज़रते रहते हैं या खड़े होकर तमाशा देखते हैं। एक शहर में एक नौजवान लड़का मेरे सामने पानी में छलांग लगा गया, मैंने पीछे छलांग लगाई, वह पानी में मिल नहीं रहा था। पटरी पर जाते हुए लोगों को मैंने बहुत पुकारा कि उस नौजवान लड़के को बचाने में मेरी सहायता करो परन्तु मेरी पुकार किसी ने नही सुनी। मनुष्य अत्यंत स्वार्थी जीव है। जैसे कौए को पता नहीं लगता कि पशु के छोटे से घाव में अपनी चोंच मार मारकर उसको कितना दुख दे रहा है, उसी प्रकार बहुत से मनुष्यों को अपने सुख के लिए दूसरों को दुख देना खटकता नहीं। चोर डाकू दूसरों को मारकर लूट लेते हैं। यहां तक कि कान, नाक नोच लेते हैं, दूसरों के बच्चों को उठाकर पैसा वसूल करते हैं, परन्तु उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता। पराए जनों के लिए ही नहीं मनुष्य अपने सगे सम्बन्धियों को बिना उनके कसूर के अपनी नाना हवसों का शिकार बनाते हैं। उनकी सुख, शान्ति, मान, इज्जत का अपहरण करके अपने को विजेता समझते हैं। अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए किसी के पद छीनने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के झूठ, और षडयन्त्रों का सहारा लेते हैं। पराया दुख उनके अंधकारमय कठोर हृदयों को पिघलाता नहीं। ऐसे जन मनुष्य के रूप में हैवान बन जाते हैं।

दूसरों की पीड़ा से बेपरवाह मनुष्य को दूसरों के हक वा अधिकार भी दिखाई नहीं देते। विशेषकर जो बाहुबल में कमजोर हों, गरीब हों, छोटे हों, उनकी तो बिल्कुल ही परवाह नहीं होती। उनकी सच्ची और ठोस पुकार भी नजायज़ दिखती है।

मनुष्य को अपने हार्दिक अंधेरे में अपने

दोष कमियां दिखाई नहीं देतीं। कमियां दूसरों में देखकर एक एक जन आलोचना करता दिखाई देता है, परन्तु अपनी ओर ध्यान नहीं जाता। बड़े बड़े पदधारी होकर, डाक्टर वा इंजीनियर होकर, वैज्ञानिक होकर भी अपनी कमियों की ओर ध्यान नहीं जाता। उसका 'मैं' का प्यार, उसे शक तक नहीं होने देता कि वह किन किन दोषों के कारण कहां पहुंच गया। अपने आपको निर्दोष सुन्दर और दूसरों को अपनी कल्पना में ही अबोधी, बेअकल बनाते बनाते अपना वास्तविक रूप देखने के बिल्कुल अयोग्य होता जाता है। अपनी 'मैं' का प्यार उसको यह सोचने के योग्य ही नहीं रहने देता कि मेरे में भी कोई कमी हो सकती है।

अपने हार्दिक अंधेरे में मनुष्य को अपनी जीवनी शक्ति, अपनी लाईफ फोर्स (आत्मा) जिससे ही उसका अस्तित्व है, बिल्कुल दिखाई नहीं देती। इसीलिए मनुष्य अपने शरीर और शारीरिक सुखों के लिए जिंदा रहता है। इसी अंधकार में सांसारिक पदार्थों, सांसारिक सुखों, सम्बन्धियों, मान सम्मान, पद प्रभुत्व को पाना ही अपना लक्ष्य समझता है, परन्तु अपने चालक भावों का कुछ भी ज्ञान उसे नहीं रहता। उसे यह सुध कहां कि कौन से भाव उसके लिए घातक हैं, कौन से उच्च भाव उसके विकासक हैं, नीच भाव घट रहे हैं या बढ़ रहे हैं, उच्च भाव घट रहे हैं या बढ़ रहे हैं। अंधाधुंध अपने नीच सुखों की तृप्ति में वा उनका पक्षपाती होकर उनके विरूद्ध सुनने की असमर्थता में अपना कीमती जीवन नष्ट करता रहता है।

मनुष्य का कोई धर्म, कोई पूजा पाठ, कोई नमाज़ रोजे और अन्य धर्म के कर्म काण्ड उसका यह अंधेरा दूर करने में पूर्णत: असमर्थ हैं। यही कारण है कि धर्मों के दिन पर दिन बढ़ते जाने से मनुष्य का अंधकार न केवल कुछ छंटा नहीं बल्कि उसकी गरिफ्त कसती चली जा रही है।

उपरोक्त अंधकारों से निकलकर ही मनुष्य अपना विकास कर सकता है। ऐसे अंधकार से मानवता को निकालने के लिए ही नेचर ने अपने विकास क्रम में देवात्मा को प्रगट किया है। उनकी अद्वितीय रोशनी में ही मनुष्य की अपनी योग्यता के अनुसार आंखें खुलती हैं। यह मनुष्य का बहुत बड़ा सौभाग्य है। यह अद्वितीय ज्योति मनुष्य को देवात्मा की पैदा की उच्च संगत से मिल सकती है। जो जन इस उच्च रोशन हो जाते हैं।

इस रोशनी में ही एक एक नौजवान ने अपने अवगुण देखे हैं, अपने पिता के प्रति अपने अपराधों को देखा, उनके चरणों को प्रतिदिन धोने का संकल्प किया। गाली गलौच करने वाले, अपने पिता को अपमानित करके खुश होने वाले बच्चे का जब अंधकार छटता है तो धरती पर स्वर्ग उत्तर आता है, ऐसा बाप भी उस रोशनी दाता के आगे झुकने को मजबूर हो जाता है।

एक एक जन ने हकीम की कृपा से अपनी पत्नि को राजी तो कर लिया, परन्तु उसका उपकारी रूप कभी दिखाई नहीं दिया, परन्तु देवात्मा की रोशनी ने उस हकीम के लिए कृतज्ञता पैदा की, अपना कृतघ्न रूप दिखाई दिया और ऐसे उपकारी के लिए भेंट देने की प्रेरणाएं हासिल की।

एक एक जन का अंधेरा छटा और इस विचित्र रोशनी में यह पुकार उठा कि यदि यह ज्योति न मिलती, मेरा घिनौना रूप मुझे दिखाई न देता तो मैं

या तो अपने बेटे को मार देता या वह मुझे मार देता। इस दरी पर बैठकर मेरा शोक मनाया जाता।

देवात्मा की रोशनी सब प्रकार के आत्मिक अंधेरे दूर करके एक नई दुनिया में प्रवेश करवाती है। दूसरों के हक और अधिकारों को दिखाती है। दूसरों के दुख और पीड़ा को दिखाती है। अपने दोष और कमियों को दिखाती है। हमारा सचाई और भलाई की दुनिया में प्रवेश करवाती है। यह ज्योति हमारी Life Force को मुख्य और अन्य सुखों को गौण दिखाती है। शारीरिक दुनिया में मनुष्य X-Ray का मुहताज है, उसी प्रकार आन्तरिक अंधेरा दूर करने के लिए मनुष्य देवात्मा की ज्योति का मुहताज है। कितने सौभाग्यवान हैं वह जन जो इस ज्योति को लाभ करने का संग्राम करते हैं और लाभ करते हैं।

बलदेव सिंह

# भगवान देवात्मा के देवरूप पर चिन्तन

## (अध्यात्मिक चेतना के नये स्वर)

यदि किसी मनुष्य ने अपने रूप के दर्शन करने हों, तो अतिरिक्त इसके कि वह यह जाने, कि मेरी खुशियों की दुनिया क्या है, उसे यह भी जानने की जरूरत है, कि मुझे किन-किन बातों से दुःख मिलता है।

एक दुकानदार जूतों का व्यापारी था, उसकी दुकान पर एक अंग्रेज जूता लेने के लिए आया। दुकानदार के पास जो सबसे अच्छे किसम के बूट थे, उसने उन में से एक जोड़ा पेश किया। दुकानदार ने उसकी कीमत सात आठ रुपये बताई। अंग्रेज ने कहा, कि यह सस्ता है, मुझे और बढ़िया किस्म का दिखाओ। दुकानदार के पास इससे अधिक मूल्य के बूट नहीं थे, परन्तु वह चालाकी से अन्दर गया, और उसी किसम में से एक और बूट लाया। इसकी कीमत उसने दस रुपये बताई। अंग्रेज बहादुर को यह भी सस्ता मालूम हुआ और उसने और बढ़िया किस्म के जोड़े के लिये आकांक्षा प्रगट की। दुकानदार अंग्रेज की प्रकृति को भांप गया और वह उसी किस्म का परन्तु और रंग का एक जोड़ा ले आया और अंग्रेज बहादुर को पेश किया। दुकानदार ने इस जोड़े की कीमत पन्द्रह रुपये बताई। अंग्रेज ने पन्द्रह रुपये निकाल कर दे दिए। दुकानदार बहुत दुखी हुआ और सारा दिन ही दुखी रहा। वह औरों के सन्मुख भी इसी दुख का प्रकाश करता रहा, कि लानत है मेरी अक्ल पर कि मैंने उस जोड़े की कीमत बीस रुपये क्यों नहीं बताई। यद्यपि वह पहले ही अंग्रेज से दुगनी कीमत ले चुका था, परन्तु वह फिर भी इस बात से दुखी था, कि जब मेरे पास एक भोला जन आया, तो मैंने उसको और अधिक क्यों न ठगा। अब ऐसा जन यदि अपने आन्तरिक रूप का दर्शन करना चाहे, तो वह तत्काल इस नतीजे पर पहुंच सकता है, कि मेरे आत्मा के भीतर इस बात से दुख उत्पन्न होता है, कि मैंने अपने साथी मनुष्य का रक्त अधिक क्यों नहीं निचोड़ा।

एक अंग्रेज ने जो कि उद्भिद् भोजी थी, मांसाहार के विरुद्ध एक ट्रैक्ट लिखा। उसमें उसने एक घटना दी है, जो बहुत शिक्षा प्रद है। वह लिखता है, कि चार पांच जन अपने खाने के लिए एक ताकतवर बछड़े का वध करना चाहते थे। वह बछड़ा बूचड़ खाने

में जाना नहीं चाहता था, परन्तु वह उसे जबरदस्ती वहां ले जाना चाहते थे, इसलिए उसे बहुत पीटा गया और अधमुआ करके उसे बूचड़ खाने में ले गये। वह बछड़े को इसलिए गालियां देते और पीटते थे और उन्हें इसलिए बहुत बड़ा दुख था, कि वह उनकी नीच तृप्ति करने में बाधा क्यों डाल रहा है। यह पिशाच दुख उन की पिशाच प्रकृति का लक्षण था। ऐसी पिशाच प्रकृति रखने वालों ने अपने क्रोध को ठण्डा और दूर करने के लिए उसको मार-मार कर अधमुआ कर दिया और फिर कठोरता से उसे बध किया। वह लेखक यह भी लिखता है, कि इस सारी कशमकश में उस बछड़े का सारा मांस इस कदर जहरीला हो गया, कि जिस जिस ने उसको खाया, उन सबके भीतर जहर के लक्षण उत्पन्न होने आरम्भ हो गए।

ऐसी महा अधम प्रकृति रखने वाले जनों को छोड़कर लाखों और करोड़ों जन इसलिए दुखी होते हैं, कि वह अपने नीच लक्ष्य में क्यों कामयाब नहीं होते। एक करोड़पति के सम्बन्ध में (जिसको मैं जानता था) मैंने यह कथा सुनी, कि उसके पास तीन करोड़ रुपये की सम्पत्ति थी। इतना धन रखकर भी वह बहुत दुखी रहता था। उसको दुख इस बात का था, कि मेरे पास केवल तीन करोड़ रुपये क्यों हैं। वह कई कारखानों का मालिक था और उसने अपनी सम्पत्ति सौदागरी से बनाई थी। अपने दुख से बचने के लिए उसको यह सूझा, कि सौदागरी से क्या बनता है, सट्टा लगा दूं। उसको अपनी योग्यता पर घमंड था। इसलिए उसने जाकर जगह-जगह सट्टे लगाए, जिन का परिणाम यह हुआ, कि वह अपने पहले तीन करोड़ रुपये भी खो बैठा और उस नीच लक्ष्य धारी का दुख उसके शरीर और आत्मा दोनों के लिए सख्त हानिकारक प्रमाणित हुआ।

इन नीच लक्ष्य धारी और कई लालचों के फंदों में फंसे हुए जनों को छोड़कर कुछ ऐसे भी माई के लाल हैं जो इस बात से दुखी हैं, कि दूसरे अस्तित्व दुखी हैं, और उनके दुखों को वह यथा साध्य दूर करना चाहते हैं, और दूर करके ही शान्ति पाते हैं। ऐसे जन अपने आप को दुखी करके दूसरों का सुख बढ़ाना चाहते हैं। उन्हीं को परोपकारी जन कहा जाता है। ऐसे ही एक बहुत बड़े परोपकारी का मैंने एक बार दृष्टांत दिया था। वह अमरीका का रहने वाला था। उसके पास करोड़ों रुपये थे। वह पहले भी बहुत सा रुपया गुप्त दान की शक्ल में दे चुका था, इसके बाद भी उसके पास करोड़ों रुपया बच गया। यह सब धन अच्छे-अच्छे भलाई के कामों में देने की खातिर उसने अपना आफिस खोल दिया। इसमें बीस कर्ल्क रक्खे और उनका सिवाय इसके और कोई काम न था, कि वे यह सच्ची अवगति प्राप्त करें, कि किस-किस नगर के जनों को किस-किस संस्था, आश्रम, होम या हस्पताल आदि की आवश्यकता है। सच्ची अवगति लाभ करने के अनन्तर उसने कई परोपकार विषयक काम जारी कर दिए। परोपकार व दया का कैसा सुन्दर भाव! इस जन को यदि कोई दुख था, तो इस बात का कि मैं कहीं शीघ्र न मर जाऊं और अपने हाथों से अपना सारा रुपया दान देने से न रह जाऊं। वह जीते जी सब कुछ देना चाहता था। वाह! इस जन का ऐसा दुख और फिकर कितना सुन्दर, कितना मुबारिक और कीमती! अपने और दूसरो के लिए कितना हितकर!!

मुक्ति फौज के बानी की जीवन कथा में यह बात आती है, कि उनका हृदय बहुत अशान्त रहता था। और वह यह जानना चाहते थे, कि मैं अशान्ति में क्यों रहता हूं। एक बार जाते-जाते वह एक ऐसी जगह जा पहुंचे, कि जहां निहायत गरीब लोग रहते थे।

ऐसे गरीबों की गरीबी और बुरे हाल को देख कर उनका हृदय फड़क उठा और उन्होंने अपने हृदय में अशान्ति और दुख अनुभव किया, और यह प्रतिज्ञा की, कि जब तक वह इन गरीबों को नहीं उभारेंगे, तब तक इनका दुख दूर नहीं होगा। इनके भीतर दया के भाव ने सुन्दर रूप में प्रकाश पाया। और उन्हें मनुष्यों की दुखिया अवस्था के देखकर जो दुख होता था, उसको दूर करने के लिए उन्होंने अपना सब कुछ निछावर कर दिया। महात्मा विद्या सागर और सर गंगा राम विधवाओं का बुरा हाल देखकर दुखी होते थे, और इन अबलाओं की दुखिया अवस्था में बेहतरी लाने के लिए उन्होंने अपना धन और अपनी अन्य शक्तियां खुशी-खुशी भेंट कर दी।

दया की शक्ति निश्चय एक विचित्र शक्ति है, परन्तु वह शक्ति मनुष्य का बाह्यक रूप ही दिखा सकती है। वह मनुष्य के बाह्यक हालात में बेहतरी लाने के लिए हृदयों को हिलाती है। परन्तु उस का आत्मिक जगत् में प्रवेश नहीं, और भी किसी सात्विक शक्ति का आत्मिक जगत में प्रवेश नहीं है, इसलिए मनुष्य मात्र का आत्मिक जगत में अत्यन्त बुरा हाल है। सारा मनुष्य मात्र आत्मिक रोगों में ग्रस्त है। आत्मिक रोगों से उनकी जो महा दुर्गति होती है, उसको सात्विक शक्तियां नहीं दिखा सकतीं और इसलिए मनुष्य मात्र की पाप जीवन, मोह बन्धनों और आत्म अंधकार ग्रस्त अवस्था को देखकर कोई जन रोया नहीं, इस अधोगति प्राप्त अवस्था को देखकर कोई जन व्याकुल और दुखी नहीं हुआ, किसी ने अपनी नींद नहीं खोई। किसी ने अपना सब कुछ निछावर नहीं किया, इस महा दुर्गति से बचाने के लिए किसी ने अपना जीवन व्रत ग्रहण नहीं किया, अपने सुख को नहीं त्यागा। हर प्रकार की कुर्बानी नहीं की, मृत्यु शय्या पर नहीं लेटा और गोलियों का शिकार नहीं हुआ और ऐसा हो भी कैसे? देव शक्तियों से विहीन आत्मा को किसी का आत्मिक पतन दिखाई नहीं देता और न उस आत्मिक पतन से छुटकारा देने के लिए किसी के भीतर सामर्थ्य पैदा हो सकती थी। ऐसा दोनों प्रकार का परिवर्तन उत्पन्न करने के लिए देव ज्योति और देव तेज सम्पन्न देव प्रभावों की आवश्यकता थी, जो बिना देव शक्तियों के पैदा नहीं हो सकते। भगवान् देवात्मा में ही देव शक्तियां उत्पन्न हुई हैं। उन्होंने ही देव शक्तियों को विकसित किया और अपने अनोखे देव हृदय में देव ज्योति और देव तेज को पैदा किया। देव ज्योति ने उन्हें मनुष्य मात्र की आत्मिक पतन की अवस्था दिखा कर उनके भीतर गहरा दुख पैदा किया और मनुष्य मात्र को उस अवस्था से निकालने के लिए उनके अति पवित्र देव हृदय को हिलाया, उन्हें अपना अद्वितीय जीवन व्रत ग्रहण करने के लिए मजबूर किया। और हर प्रकार का त्याग और समर्पण करने के लिए तैयार किया। और देव तेज ने उनके आत्मा में अद्वितीय देव बल पैदा कर दिया, कि जिस देव बल से उन्होंने आत्मिक पतन के राही और मोह ग्रस्त जनों का आत्मिक पतन दूर करना आरम्भ किया। इस अति महान, अति आवश्यक और परम कल्याणकारी लक्ष्य को सिद्ध करने के लिए उन्हें जिस प्रकार का घोर युद्ध करना पड़ा, आत्मिक पतन के विष से पागल हुए मनुष्यों ने उन्हें जिस घोर दुख में से गुज़ारा, वह एक ऐतिहासिक बात है। भवगान देवात्मा ने अपने इस दुख का निम्नलिखित विलाप में कुछ संकेत किया है:

"सारे दिन की सख्त मेहनत के अनन्तर एक पापी से पापी मजदूर भी रात को आराम से सोता है, और सुबह को फिर काम करने के योग्य बन जाता है, परन्तु मुझे अनेक बार रात का यह आराम भी प्राप्त नहीं।

आह! मैं उस साधारण आराम से भी वंचित किया गया हूं, कि जो इस दुनिया में छोटे से छोटे जीवन धारी को भी प्राप्त है।"

"प्रश्न यह है, कि मुझे यह सब महा कष्ट क्यों मिल रहा है? क्या यह मेरे किसी पाप का फल है? कदापि नहीं, क्योंकि मैं प्रत्येक नीच अनुराग के अधिकार से ऊपर हूं। तब फिर प्रश्न यह है कि यह दुख और अज़ाब कहां से हैं? इसके उत्तर में मुझे यह कहना पड़ता है, कि यह सब घोर कष्ट मुझे उन लोगों के अत्याचार अथवा अनुचित आचरण से मिल रहा है जिनका उद्धार और उनमें उच्च जीवन उत्पन्न करना मेरी ज़िन्दगी का मिशन है।"

वाह! भवगान देवात्मा की उपरोक्त देववाणी किस श्रेष्ठ लोक की वाणी!! और कुल जगत् के उद्धार और सर्वोच्च कल्याण के लिए किस कदर मुबारिक और बेहद बरकतों की दाता!!!

इसी प्रकार एक और जगह पर भगवान देवात्मा फरमाते हैं:

"यद्यपि मनुष्यों में रहकर मैं उनके साथ अपना उचित सम्बन्ध अवश्य अनुभव करता हूं, परन्तु मैं अपने देव जीवन की निराली उच्च गतियों के विरुद्ध उनकी नीच गतियों को देखकर अपने हृदय में बहुत आघात और क्लेश पाता हूं।"

"ऐसी कई अवस्थाओं में मेरे हृदय में एक-एक बार यहां तक ख्याल उठा, कि यदि मैं इस अद्वितीय संग्राम में खत्म भी हो जाऊं और सदा के लिए अपने सारे अस्तित्व को भी खो बैठूं, तो भी मैं अपने जीवन व्रत के पथ में भ्रष्ट नहीं हो सकता। नेचर के कार्य में हर अस्तित्व का कोई न कोई परिणाम है, और यदि मेरे अस्तित्व के प्रकाश का परिणाम यही है, तो यही सही, मुझे उसी में सन्तुष्ट रहना चाहिए।"

## शोक समाचार

बहुत शोक कि नरायणगढ़ अम्बाला के एक समय देव समाज के गढ़ बांसल परिवार, श्रीमान लाला लक्षमण दास जी और उनके सपुत्र श्रीमान राम चन्द्र जी ऐडवोकेट के सपुत्र डाक्टर राजकुमार जी का 8 मार्च 2018 को हैदराबाद में देहान्त हो गया है। वह 90 वर्ष के थे। वह भी अपने पिता जी की तरह देव समाज के पक्के सेवक थे। उनके 2 भाई थे। एक दिल्ली हाईकोर्ट में जसटिस थे और दूसरे भाई टीचर थे। डाक्टर साहिब बेहद नम्र प्रकृति रखते थे। समाज के कर्मचारियो के लिए बहुत सन्मान रखते थे। उनकी धर्म पत्नी डाक्टर पुष्पा बांसल, कोलिजों में हिन्दी भाषा विभाग में विशेष स्थान रखती थी। वह भी बहुत ही नेक और सुहृदय हैं। उन्होंने कई पुस्तकें भी लिखी हैं। डाक्टर, साहिब और पुष्पा जी हैदराबाद (तैंलगाना प्रदेश) अपने सपुत्र पास रिटायर होने के बाद रहते थे। हम अपने प्यारे धर्म सम्बन्धी के शोक प्रद देहान्त पर हम उनकी धर्म पत्नी और बच्चों के शोक और दुख प्रगट करते हैं।

डाक्टर राजकुमार जी को परलोक में सब प्रकार की सहायता मिले उनके आत्मा को शान्ति मिले, यहीं हमारी दिली कामना है।

डाक्टर पुष्पना जी ने अपने पति के देहान्त पर श्री अकबरपुर, भगवान देवात्मा की हवेली के लिए 50,000 रूपये दान दिए है। इसके लिए उनका धन्वाद और मुबारकबाद।

प्रार्थी - बलदेव सिंह

# बरकतें लाभ करने का अधिकार पाना एक बात है, लेकिन उन्हें सफल करना दूसरी बात है

ईरान के इतिहास में एक गवर्नर का जिक्र आता है, कि वह पहले गडरिया था। अपनी विशेष योग्यता के कारण उसने ईरान के शहंशाह का ध्यान अपनी तरफ आकृष्ट किया, और शंहशाह की कृपा से वह दिनों दिन उन्नति लाभ करता गया। आखिरकार शहंशाह ने उसको एक प्रान्त का गवर्नर बना दिया। यह गडरिया गवर्नर जब दौरे पर जाता था, तब एक ऊंट पर एक खास बौक्स लाद कर उसको अपने साथ ले जाता था। इस बौक्स वाले ऊंट के गिरद चार सिपाही पहरा देते थे। और साथ चलते थे। लोग हैरान रहते थे, कि इस बौक्स में क्या है? जिस की रक्षा के लिए चार बड़े पहलवान नंगी तलवारों के साथ पहरा देते हैं। इस गवर्नर के कई वाकफकार जो बहुत ईर्ष्या परायण थे, वह गवर्नर की बढ़ती हुई इज्जत के कारण उस के दुश्मन बने हुए थे, और वह ईर्ष्या भाव के कारण इस ताक में रहते थे कि इस गवर्नर को नुकसान पहुंचायें, और शहंशाह को बदजन करके उस को गवर्नर की पदवी से गिरा दें। आखिर बादशाह को उन्होंने शिकायत की गवर्नर बन्द दरवाजे में कुछ करता है, वहां किसी को जाने की इजाज़त नहीं होती। एक दिन राजा को वह दिखाने के लिए ले गए। जब दरवाज़ा खोला तो वह गवर्नर गडरीए के भेस में था, राजा के पूछने पर उसने बताया कि महाराज मैं भूलना नहीं चाहता कि मैं क्या था? राजा ने खुश होकर उसे और उन्नित दे दी।

एक सुन्दर कथा है जो अमेरिका की उस महान हस्ती के सम्बन्ध में है जिसका नाम कारनेगी है। वह जन इस कदर धनाढ्य था कि जिस की आमदनी साल में करोंडों रुपए होती थी। यह एक बहुत गरीब बाप का बेटा था। स्काटलैंड का रहने वाला था। गरीबी के कारण यह अमेरिका चला गया। पहले पहल यह अखबार बेचकर गुजारा करता था। परन्तु अपनी विशेष योग्यता के कारण उन्नति की सीढ़ी पर इस कदर चढ़ता गया कि दुनिया दंग रह गई। वह बहुत बड़े कारखाने का मालिक हो गया। धन कमाने के साथ साथ मनुष्यों में जो दो बहुत बड़ी भयानक अवस्थाएं उत्पन्न हो जाती हैं, अर्थात कंजूसी और स्वार्थ वह उसमें पैदा नहीं हुई। ज्यों ज्यों धन उसके पास इकट्ठा होता गया, त्यों त्यों उसके भीतर धन को परोपकार के काम में खर्च करने का भाव बढ़ता गया। कहा जाता है, कि उन्होंने अपने वतन की सारी तालीम सब के लिए मुफ्त कर दी, और इस कदर दान में पैसे बहाए कि दुनिया हैरान रह गई। उनके बच्चे थे। लड़कियां थी। लेकिन धन उन्होंने अपने बच्चों के लिए नहीं समझा। उनको कमाने के योग्य बनाया और थोड़ा सा ध न उनकी मदद् के लिए रख दिया, परन्तु बहुत अधि क संख्या में धन उन्होंने परोपकार के काम में दिया। वह हमेशा यह स्मरणीय शब्द कहा करते थे कि धन कमाना इतना मुश्किल नहीं, जितना धन को सफल करना मुश्किल है। धन कमाने का हुनर कईयों में है, परन्तु धन को सफल करने का भाव किसी किसी माई के लाल में ही पाया जाता है।

देव समाज जैसी विशेष सोसाइटी में आकर

और उसकी बरकतों को पाने के अधिकारी होकर कई जन दीन और कृतज्ञ बनने की बजाय जब अपनत्व के भंवर में पड़ जाते हैं, तब कई सूरतों में वह दीन से भी जाते हैं, और दुनिया के विचार से भी मारे जाते हैं। मुझे देव समाज के इतिहास में एक कृतघ्न का पता है कि जिसने भगवान देवात्मा की सेवकी के जमाने में अपने जीवन में इस कदर परिवर्तन लाभ किया कि ऐसा मालूम होता था कि दान करना मानों उसके जीवन का अंग बन गया है। जब उनके पास देव समाज का सत्संग जाता था तब उसको इस कदर चाव चढ़ जाता था कि वह उन सबकी सेवा में अपने धन को खर्च करने में अपना बहुत बड़ा अधिकार समझता था। देव समाज को समय समय में अच्छा दान भी देता रहा। भगवान् देवात्मा के चरणों में भी बहुत कुछ भेंट करता रहा और उसके जीवन से बहुत अच्छे फल उत्पन्न होने आरम्भ हो गए, परन्तु दुर्भाग्य से वह सब बरकतें पाकर और चारों तरफ से अपनी महिमा सुनकर उसके घमण्ड ने सिर उठाया और उसके इस नामुराद भाव ने उसको फरिश्ता समाज से निकाल कर बाहर फैंक दिया, और दुनिया परस्तों के हवाले कर दिया। मुहसन आजार और मुहसन कुश तो वह हो ही गया, परन्तु हमारी हैरानी की कोई हद न रही, जब एक मण्डल के प्रेजीडेन्ट ने हमारे एक साथी सेवक से पूछा कि क्या यह जन जब देव समाजी था तब कभी कोई दान पुण्य भी किया करता था? उस सेवक ने कहा कि हां बहुत दान करता था। वह कहने लगे, यह बात मानने के योग्य मालूम नहीं होती, क्योंकि हमारे लिए तो उनसे किसी प्रकार का वायदा दान वसूल करना भी कठिन है, जब कि वह हमारे जत्थे का मेम्बर है।

मेरे पास इस समय एक जन का पत्र विद्यमान है। उसका कुछ भाग इस लेख के साथ सम्बन्ध रखता है। वह लिखते हैं: -

"मैं एक मामूली सी हैसियत में शुरू में समाज के काम पर लगा था परन्तु विशेष श्रद्धा और सम्मान के योग्य श्रीमान..... जी की कृपा से मैं इस योग्य हो गया, कि मुझ में अपने सम्बन्ध में कुछ सोझी उत्पन्न हो गई। और मैं काम करने के काबिल हो गया। और फिर धीरे धीरे समाज ने कृपा करके मुझे देव समाज की दो बड़ी संस्थाओं का इन्चार्ज बना दिया। इस तरह मैंने क्या पैसों के विचार से, क्या सम्मान और पदवी के विचार से जो कुछ उन्नति की है, उसे आप अच्छी तरह जानते हैं, मेरे बयान करने की चीज नहीं। यह सब कुछ पाकर मैं दुनियांवी पहलू में जिस कदर सुखी और शान्ति की हालत में हो गया, उसका बयान नहीं हो सकता, क्योंकि क्या बाहर के लोगों की तरफ से और क्या सामाजिक जनों की तरफ से सम्मान की दृष्टि से देखा जाने लगा। पैसों के विचार से अच्छा गुजारा होने लगा, परन्तु इस सबके होने पर धीरे धीरे मेरी आंखों से मेरे जीवन का मुख्य लक्ष्य ओझल होने लगा। और मैं अपनी आत्मिक पूंजी की रक्षा और उन्नति करने की तुलना में दुनियावी सामानों और सम्बन्धियों की ओर आकृष्ट होने लगा और उस तरफ जाना मुझे प्रिय बोध होने लगा। फिर इसका जो कुछ जरूरी फल हो सकता था, उसका अनुमान किया जा सकता है। मुझे भगवान देवात्मा की समाज, उनके कर्मचारी और उनका कार्य इस कदर प्रिय न रहे, जिस कदर कि अपना सुख और आराम लाभ करना प्रिय हो गया। इसलिए मैंने परम पूजनीय भवगान से सम्बन्ध बढ़ाने की बजाय दुनियावी

सामानों, सम्बन्धियों और सुखों से अपनी लगन बढ़ानी आरम्भ की। इस से मेरा बुरा हाल होना जरूरी था। इसीलिए मेरी चिन्ताओं और मेरी क्रियाओं में बराबर अन्तर आने लगा। और कई बार मैं यहां तक बोध करने लगा कि यदि मेरा यही हाल रहा, तो वह दिन दूर नहीं, कि मैं समाज के काम से ही अलग हो जाऊं। मेरा घमण्ड इस कदर बढ़ गया, कि मैं अपनी कीमत अधिक लगाने लगा। और दिल में यह चक्कर चलने शुरू हो गए कि मैं अब एक बड़ा आदमी बन गया हूं। और बहुत आला काम करने वाला हूं, इसलिए परम पूजनीय भगवान के पैदा किए हुए उच्च जीवन धारी कर्मचारी भी फीके और तुच्छ मालूम होने लगे। उनके सम्बन्ध में श्रद्धा और सम्मान भाव तो क्या होना था, उनके अवगुण नजर आने लगे। और अपना वजूद और अपनी ताकतें उनकी तुलना में बढ़िया बोध होने लगे, इस रास्ते के मुसाफिर का जो हाल होना चाहिए, उसका आप अनुमान कर सकते हैं।"

यह जन यहां तक तो अवश्य सौभाग्यवान हैं, कि उनको अपनी अवस्था का बोध हुआ। और उसके सम्बन्ध में बोधी होकर वह खबरदार हो गए, परन्तु उनके जीवन से यह यथेष्ट प्रमाण मिलता है, कि भगवान देवात्मा के दरबार में आकर और उनके ही देव प्रभावों की बरकत से कई पहलुओं में उन्नति पाकर भी कोई जन तब तक सलामत नहीं, कि जब तक वह भगवान देवात्मा के दरबार में अपने आपको दीन और भिखारी बोध न करे, और उनको दाता और मालिक अनुभव न करे। अगर कोई जन ऐसी अवस्था को न लाभ कर सकेगा, तो भगवान देवात्मा के दरबार से कई अंगों में बरकतों को लाभ करके उनके सम्बन्ध में घमण्डी बन जाएगा। उनके सम्बन्ध में विमुख हो जाएगा। और कई सूरतों में उनके सम्बन्ध में कृतघ्न और दुखदाई बन जाएगा। हम कभी भी इस सच्चाई को न भूलें, कि भगवन तो देवात्मा हैं, और हम मनुष्यात्मा हैं। इसलिए देवात्मा की तुलना में हम बेहद घटिया दर्जे के अस्तित्व हैं। देवात्मा और मनुष्यात्मा में प्रकृति गत मूल अन्तर है। और जिस प्रकार भौतिक सूर्य के सम्बन्ध में हमारी यह अवस्था है, कि हम शारीरिक जीवन के विचार से सदा के लिए उस पर निर्भर करते हैं, ठीक उसी प्रकार भगवान देवात्मा जो आत्मिक जगत के सूर्य हैं, हम आत्मा के विचार से उनके सदा के लिए मुहताज हैं। हमें बार बार यह पद गान करना चाहिए: -

"भूलूं न तुम्हारी कृपा, भूलूं न अपनी हालत,
मैं दीन भिक्षाकारी, तुम दाता और मालिक।"

(अर्मत वर्षा)
पी०वी० कनल

## सूचना

*धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :* -श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

# भगवान व धर्म

## शान्ति के सबसे बड़े बाधक?

आज की दुनिया में सब से अधिक आवश्यकता है शांति की, किंतु शांति रहे तो कैसे? लोग शांति की बातें तो बहुत करते हैं परन्तु शांति रहती नहीं। एक जगह दंगाफसाद रुका नहीं कि दूसरी जगह शुरू हो जाता है।

जैसे जैसे विज्ञान में प्रगति हो रही है, जैसे जैसे लोग शिक्षित होते जो रहे है।, वैसे वैसे लोगों का स्वार्थ भी बढ़ता जा रहा है। नतीजा यह है कि कहीं अलग देश, अलग राज्य या अलग जिले की मांग की जा रही है। दूसरे जिएं या मरें, इस की किसी को चिंता नहीं। हमें तो अपने जीने और कमाने खाने की चिंता है और इस के लिए हम मरने मारने को भी उतारू रहते हैं।

इन्हीं स्वार्थों की खातिर आज हिंदू ऊंच नीच का भेदभाव रच कर आपस में लड़ रहे हैं। मुसलमान शिया और सुन्नी के नाम पर लड़ रहे हैं, उधर सिख और हिंदू भी लड़ रहे हैं। हिंदू मुलमान का झगड़ा तो पुराना है ही। अब एक राज्य वाले दूसरे राज्य वालों से लड़ रहे हैं, एक देश दूसरे देश से लड़ रहा है। जैसे जैसे हम अनेकता में एकता लाने की बातें करते हैं। वैसे वैसे झगड़ा और अधिक बढ़ता दिखाई देता है।

धर्म, जाति, भाषा, संस्कृति आदि का जन्म हुआ था भौगोलिक परिस्थितियों के कारण, लोगों को एकसूत्र में बांधने के लिए, आपस में मेल मिलाप रखने के लिए। लेकिन यह तो उस समय की बात है कि जब आवागमन के साधन नहीं थे या बहुत सीमित थे। लोग सीमित जगह में रहते थे, चंद लोगों से मुलाकात होती थी। तब धर्म, भाषा, जाति, संस्कृति आदि से उन्हें वास्तव में एकसूत्र में बंधने में मदद मिलती थी।

आज आदमी सुबह का नाश्ता भारत में करता है, दोपहर का भोजन लंदन में खाता है और रात सनफ्रांसिस्कों में बिताता है। छोटे सफर की बात कीजिए तो आदमी बस या ट्रेन से एक दिन में एक दो जिले या एक दो राज्य तो पार कर ही लेता है।

आज के जीवन में "सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तान हमारा" का नारा हमें त्यागना होगा। आज हम केवल भारतीय, पाकिस्तानी, रूसी या अमरीकी नहीं रह गए हैं। आज हम सम्पूर्ण पृथ्वी के निवासी कहलाने के योग्य हो गए हैं, परन्तु इसे स्वीकार कौन करेगा? धर्म, भाषा, संस्कृति इन सब चीजों का मोह हमें अपने आप को पृथ्वीवासी कहने में बाधक सिद्ध हो रहा है और इन सभी चीजों की जड़ को मजबूत कर रहा है - अंधविश्वास।

प्रत्येक व्यक्ति को दूसरे लोगों के अंध विश्वासी होने का आभास तो मिल जाता है, लेकिन वह स्वयं को अंधविश्वासी मानने को तैयार नहीं होता। फिर भी समय आने पर वह स्वयं सब से अधिक अंधविश्वासी होने का प्रमाण देता है। आखिर अंधविश्वास लोगों में आ कैसे जाता है? इस का सब से बड़ा कारण है - भगवान, जो न कभी था और न जिस के होने के कोई प्रमाण मिलने की संभावना है।

### अज्ञान की उपज भगवान

एक तरफ हम भूतप्रेत पर विश्वास करने वालों को अंधविश्वासी कहते हैं, बकरा, पाठा या नर

बलि देने वाले को बुरी तरह कोसते हैं, तो दूसरी तरफ हम स्वयं नारियल, धूप, अक्षत, बेलपत्र, पुष्प और पकवान इत्यादि भगवान की मनगढंत मूर्तियों पर चढ़ा कर अपने स्वार्थ की सिद्धि की भीख मांगते हैं। भला वह 'स्रष्टा' कैसा जो अपनी ही सृष्टि के किसी प्राणी की बलि दिए जाने से खुश होता हो?

अगर थोड़ी देर के लिए हम मान भी लें कि भगवान ने ही यह सारी सृष्टि रची है, वह सर्वशक्तिमान है तो क्या वह किसी कायदे कानून में न रह कर अपने हर भक्त की इच्छा पूर्ति कर देगा? अगर दो व्यक्ति आपस में शत्रु हैं और दोनों ही भगवान से मदद के लिए प्रार्थना करते हैं तो क्या वह दोनों की प्रार्थना स्वीकार कर लेगा? अगर एक की स्वीकार करेगा और दूसरे की नहीं तो क्या वह दूसरे के प्रति अन्याय नहीं होगा?

भगवान को देखने का दावा करने वालों ने भी भगवान को कभी प्रत्यक्ष नहीं देखा है। वे केवल यह सोच कर चले हैं कि जब हम किसी चीज की रचना करते हैं तो हमारी और इस सृष्टि की रचना भी किसी ने अवश्य की होगी। किस्से कहानियां या धर्मग्रंथों को पढ़ कर भी कोई कोई भगवान को देखने का ढोंग करने लगते हैं।

कोई भी आदमी यदि हर समय एक ही बात सोचता रहे तो सो जाने पर उसे उसी सम्बंध में सपने आने लगते हैं। यदि कोई आदमी दिन में सांप को अचानक देखकर भयभीत हो जाए तो उसे अंधेरे या सपने में भी ऐसा लगेगा जैसे सांप फन फैलाए उस के सामने खड़ा है। यह एक प्रकार की मानसिक कमजोरी है कि कभी कभी किसी चीज के न होने पर भी हमें उस चीज की अनुभूति हो।

तो फिर सभी लोग भगवान को मानने कैसे लगे? यह भगवान आया कहां से? वास्तव में आदिम लोगों को हमारी पृथ्वी के बारे में जानकारी नहीं थी। यहां तक कि अपने शरीर के बारे में भी जानकारी नहीं थी। जीवों का पैदा होना, बड़ा होना, बीमार पड़ना, मर जाना और फिर जलवायु का बदलना, आंधी, तूफान, वर्षा, गरमी, जाड़ा इत्यादि होना सब उन के लिए एक पहेली थी। इसीलिए लोगों ने यह मान लिया कि जरूर कोई ऐसी शक्ति है जो छिप कर इस दुनिया को अपनी मरजी से चला रही है।

इस प्रकार कल्पना की गई भगवन की, स्वर्गनरक की। देवी देवताओं की ही नहीं बल्कि जोजो चीजें हमें तकलीफ और आराम देती थीं, सभी को भगवान या भगवान का रूप मान लिया गया, जैसे सूरज चांद, वायु, अग्नि, जल। यही नहीं गंगा को भी कि धारा बदल कर लोगों को तकलीफ देती थी और साथ में पीने और खेती के लिए जल देती थी, देवी मान लिया गया। उस की पूजाअर्चना की जाने लगी ताकि वह हमें आराम ज्यादा और तकलीफ कम दे। यही अंध विश्वास हमारे अंदर बचपन से जब हम कुछ नहीं जानते होते, कूटकूट कर भर दिया जाता है।

जब हम होशियार हो जाते हैं, दुनियां को कुछ कुछ समझने लगते हैं, भगवान के अस्तित्व पर कुछ कम विश्वास करने लगते हैं, तब भी हम जब किसी मंदिर के पास से गुजरते हैं तो न चाहते हुए भी अनायास ही हमारे दोनों हाथ जुड़ कर ऊपर की ओर उठ जाते हैं, मांबाप, अड़ोसपड़ोस वालों द्वारा हमारे मन में बिठाए गए उस तथाकथित भगवान को प्रणाम करने के लिए।

यह सब इसलिए होता है कि हम दुनिया को नहीं समझ पाते हैं, हमारी दुनिया, हमारा ब्रह्मांड, हमारी

आकाशगंगा, इतनी बड़ी है कि इस को समझने के लिए हमारा विज्ञान भरपूर कोशिश करते हुए भी इस का कुछ ही भाग समझ पाया है। यदि पृथ्वी के बारे में थोड़ा भी समझना हो जैसे रातदिन क्यों होते हैं, ग्रहण क्यों लगता है, जाड़ा, गरमी, बरसात क्यों होती है, जीव क्यों और कैसे पैदा होते हैं और फिर मर क्यों जाते हैं, हमारी खेती कैसे होती है तो हमें विज्ञान को समझना होगा।

किंतु विज्ञान को समझने के लिए गणित को समझना जरूरी हैं। गणित तो सिर्फ 15 प्रतिशत शिक्षित आदमी ही समझ पाते हैं। फिर 15 प्रतिशत में सिर्फ एक तिहाई लोग ही विज्ञान को समझ पाते हैं। जिसे समझ में आ भी जाता है कि भगवान है ही नहीं, उसे दूसरों को अपने मन की बात बताना पहाड़ तोड़ने से भी अधिक कठिन हो जाता है।

इस कल्पित भगवान से लोग इतना अधिक डरते हैं कि वे एक तरफ तो कहते है कि भवगान की मरजी के बिना पता भी नहीं हिलता, और दूसरी तरफ यदि कोई 20 सवारी वाली गाड़ी दुर्घटना हो कर 15 आदमी मर जाएं और 5 आदमी जिंदा बच जाएं तो वे कहेंगे कि 5 आदमियों को भगवान ने बचा लिया। वे किसी भी हालत में यह नहीं बोल पाएंगे कि 15 आदमियों को भगवान ने मार डाला। किंतु जहां मरने वाली बात है वह ड्राईवर ने मार डाला और बचने वाले को भगवान ने बचा लिया। यह कैसी अजीब बात है?

सोचने समझने की बात यह है कि गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हुई तो किसी कारण से हुई। यदि भगवान को बचाना ही था तो दुर्घटना क्यों होने देता? यदि मारना था तो फिर सामने आ कर उसे उनके गुनाहों को बताते हुए आमने सामने मारना था ताकि दूसरे लोग दोबारा वही गुनाह करने का साहस न करें। यदि भगवन सर्वशक्तिमान है तो उसे न तो पुलिस का डर होना चाहिए न कानून का फिर सामने आ कर मारने से क्यों डरता है?

हम देखते हैं कि पानी ऊपर से बरसता है, ऊपर ही भयंकर रूप से बादल गरजता है, और फिर ऊपर से ही बिजली गिरती है जिस से अनेक बार काफी विनाश हो जाता है। इन्हीं सब कारणों से तथाकथित भगवान के ऊपर होने का अनुमान लगाया गया, क्योंकि भगवान ऊपर रह कर ही ये सब काम करता है, इसी लिए भगवान का नाम 'ऊपर वाला' पड़ गया। आज के वैज्ञानिक युग में जब पूरे ब्रह्मांड के बारे में काफी कुछ मालूम कर लिया गया है, यह सिद्ध हो गया है कि ऊपर कोई न तो भगवान है, न स्वर्ग, और न ही कोई धरती के नीचे कोई पाताल है या नरक।

आदिकाल का मानव तत्कालीन परिस्थितियों के कारण भगवान को भय से और इस भ्रांति के कारण मानने लगा कि शायद इस से उस की अपनी सुख शांति बनी रहेगी, किंतु आज के विवेकशील और पुराने संस्कारों से मुक्त मानव को भगवान को मानने का कोई कारण ही दिखाई नहीं पड़ता। भगवान को न मानने से उसे कोई खतरा, कोई हानि भी दिखाई नहीं पड़ती। केवल अंधविश्वास ही एक चीज है जो अदृश्य होते हुए भी भगवान को मानने के लिए मजबूर करता है और इन्हीं अंध विश्वासों के कारण हम पथभ्रष्ट हो जाते हैं, आपस में लड़ते झगड़ते हैं।

यही नहीं, अपने भगवान के प्रति श्रद्धा दिखाने के लिए हम दूसरे धर्मावलंबियों से घृणा तक करने लगते हैं, उन की जान के दुश्मन बन जाते हैं।

यों तो हम बराबर यह कहते नहीं अघाते कि यह सब ईश्वर की माया है, हम सब उसी की रचना हैं, लेकिन जब अपने अपने धर्म की बात आती है तो यह तथाकथित ईश्वर भी सब धर्मावलंबियों का अलगअलग हो जाता है। हम अपने समुदाय के स्वार्थ की ही बातें करने लगते हैं और अपने धर्म की रक्षा के नाम पर हथियार जमा करने लगते हैं जो समय आने पर मानव विनाश का कारण बनते हैं।

**अंधविश्वास का एकमात्र कारण**

इस प्रकार हम देखते हैं कि यह भगवान ही सारे अंधविश्वासों का कारण है। जब तक हमारे बीच भगवान रहेगा तब तक अंधविश्वास भी बना रहेगा और जब तक अंधविश्वास रहेगा तब तक हम अपने धर्म, जाति, मातृभूमि, संस्कृति, संस्कारों, भाषा, रंगभेद इत्यादि का मोह नहीं छोड़ सकते। इस प्रकार एक समुदाय के लोगों का दूसरे समुदाय के लोगों से झगड़ना बंद नहीं हो सकता।

प्राय: प्रत्येक देश की सरकार किसी न किसी प्रकार के सामुदायिक झगड़े को लेकर शक्ति, पैसा और समय बरबाद कर रही है, स्वयं हमारे देश में दूसरे देशों की अपेक्षा कुछ अधिक ही सामुदायिक और सांप्रदायिक झगड़े होते हैं। सरकार को इन झगड़ों को शांत करने के लिए काफी रुपया, समय और शक्ति नष्ट करनी पड़ रही है, जिस से विकास के कामों की गति धीमी पड़ गई है।

अत: आज के युग में पुराने नारों को भुला कर कुछ नए नारों की आवश्यकता है जैसा कि:

"कुदरत ने दी है एक ही धरती, हम ने कहीं भारत कहीं ईरान बनाया।

कुदरत ने पैदा किया है मानव को, हम ने किसी को हिन्दु किसी को मुसलमान बनाया।"

आज आणविक अस्त्रों के निर्माण को बंद करने की आवाज सारी दुनिया में उठ रही है, लेकिन यह तभी संभव है जब सब लोगों में आपसी भाईचारे की भावना हो। वे एक दूसरे के बीच धर्म, जाति या वर्णों की दीवार खड़ी न कर के सब को सच्चे दिल से एक सा इंसान समझें। आज का इंसान आपसी भाईचारे के, अनेकता में एकता के, इनसानियत के बड़े बड़े भाषण तो दे डालता है, लेकिन वही इनसान जब अपने समुदाय में पहुंचता है तो उस की इनसानियत सिर्फ अपने समुदाय में सिमट जाती है। वह अपने समुदाय की भलाई के लिए दूसरे समुदाय के विरुद्ध षडंयत्र रचने में जुट जाता है। क्या इस का मतलब यह है कि वह आदमी बहुत खराब है? नहीं, वह आदमी खराब नहीं है। वह भी दूसरों की भलाई चाहता है, लेकिन सिर्फ अपने समुदाय के लोगों की।

इन सब का कारण है वह शिक्षा, वे संस्कार जो बचपन से ही उस के मन में कूटकूट कर भर दिए हैं। इस स्थिति को बदलने के लिए सभी तरह के अंधविश्वासों को हटाने की आवश्यकता है। इस के लिए रूढ़िवादिता में विश्वास न करने वालों को आगे आना होगा। उन को अन्य लोगों को समझाना होगा। शिक्षा नीति में तदनुसार परिवर्तन करना होगा। ताकि नई सदी में प्रवेश करने वाली पीढ़ी सारी दुनिया को एक समझे।

लेखकों का विशेष रूप से यह कर्तव्य है कि वे लोगों के अंधविश्वास को हटाने में योगदान दें। पाठ्य पुस्तकें परीकथाओं और अदृश्य शक्तियों की

गुणगाथाओं से भरी रहती है। इस से भविष्य के कर्णधार छात्रों का मनोबल गिरता है। वे तथाकथित भगवान तथा अदृश्य शक्तियों पर भरोसा कर असाध्य आकांक्षाओं के पूरा होने का सपना देखने लगते हैं और पथभ्रष्ट हो जाते हैं। किसी के साथ अन्याय कर के भी वे समझते है कि भगवान की पूजाअर्चना या दानपुण्य कर के वे दोषमुक्त हो सकते हैं।

जब हम भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान या जीव विज्ञान पढ़ते हैं तब तो हमें कहीं पर भगवान नहीं मिलता, कहीं पर कोई अदृश्य शक्ति काम करते हुए नहीं मिली, रूढ़िवाद नहीं मिलता अंधविश्वास नहीं मिलता। इसी तरह कथाकहानियों से, उपन्यासों से, साहित्य से भगवान को निकालना होगा, तभी अंध विश्वास हट सकता है।

सरिता मुक्ता रिप्रिंट 7 से साभार

# सत्संग में बैठकर

श्रीमान जी,

सत्य देव की जय।

साधारण दुनिया के वातावरण में रहकर इस वातावरण (सभाओं) का मोल नहीं दिखता, अपनी ही बनाई हुई उलझनों में फँसकर दुःखी होते रहते हैं।

सभाओं में आकर ख्यालात बदलते जाते हैं। उच्च प्रभावों का खेल मुझ नीच पर भी कुछ कुछ मात्रा में होने लगता है। जितना समय सत्संग सभाओं में व्यतीत करता जाता हूँ, जीवन की प्लानिंग अच्छी बनती जाती है। परन्तु संगत से दूर होकर फिर वही आत्मा के घनघोर अन्धेरे में सिर्फ नीच अनुरागों की तरफ ध्यान जाता है, लक्ष्य बदलते जाते हैं, सुध-बुध खत्म होने लगती है।

इस बार की सत्संग की सभाओ में योग देकर मन तृप्त हो रहा था। एक सभा हानि परिशोध के विषय पर हुई, सुनकर इतने सालों बाद महसूस हुआ कि यह विषय इतना मुख्य है इस कोर्स में से गुजरना इतना जरूरी है कि इसके बिना श्रद्धा, कृतज्ञता है भी तो भी आत्म-विकास अधूरा है। साचारण मनुष्य तो क्या बड़े-से बड़े साधक के लिए भी हानि परिशोध के कोर्स में से गुजरना बेहद जरूरी है।

एक सभा में बताया गया कि जैसे पिंजरे में फँसे चूहे को देखकर भी चूहों को अपने भले को समझ नहीं आती वह भी उसी पिंजरे में जाकर खाना-पीना चाहते हैं उसी तरह हम मनुष्य अपने आस-पास के माहौल देखकर भी अपने भले-बुरे के सही निर्णय नहीं ले पाते। जिन नीच भावों के वश होकर हमारे सम्बन्धी आपस में उलझते हैं, खुद रोगों, बुरी घटनाओं में फँसते है दूसरों को भी दुखी करते हैं उन्हीं नीच भावों में हम भी घुलते रहते हैं। वहीं क्रियाएँ हम भी दोहराते हैं। न हमें इस पक्ष में होश आती है। दूसरा यदि हमारा कोई सम्बन्धी हमारे सामने उच्च जीवन के वातावरण में वास करके अपने जीवन में परिवर्तन कर लेता है, उसके घर परिवार में स्वर्गीय दृश्य पैदा होते है। इसकी परख़ भी हम नहीं कर पाते बल्कि अपनी ही मनमर्जी, कुसस्कार ग्रस्त चाल से बुरे फल ही भोगते रहते हैं।

एक सभा के बाद देव-आरती के दौरान अपनी पुरानी महाघटिया अवस्था (नीच आकर्षण की हालत) के दृश्य मेरे सामने आकर मुझे दुःखी करते रहे। ऐसा महसूस होता रहा कि मैं अपने को बहुत सुन्दर व स्वस्थ हालत में जो देखता हूं परन्तु गुरू के प्रभाव मुझे दिखा रहे थे कि मैं एक खोटा सिक्का हूं जो यूं ही अपनी कीमत ज्यादा लगाए खनकता फिरता हूं। ऐसी सच्ची अवस्था सामने आने पर गुरू के आगे सिर सजदा होता रहा।

# कल्याण सत्संग

## 23 – 2 – 2018 से 28 – 2 – 2018

कल्याण में तीन दिन का सत्संग रखा गया। इसके लिए सारा प्रबन्ध पहले से ही किया जा चुका था। इस सत्संग से लाभ उठाने के लिए गंगानगर, पदमपुर, गज सिंह पुर, मल्लेका, केसूपुरा, सिरसा, गोनियाणा, डेरा बस्सी, चण्डीगढ़ से धर्म सम्बन्धी पधारे। श्रीमान बलदेव सिंह जी, जगदीश जी और ओम प्रकाश जी चण्डीगढ़ से पहुँचे। बाहर से आए धर्म सम्बन्धियों की गिणती 34 - 35 तक हो गई थी। श्रीमान बलबहादुर जी सत्संग से पहले गांव में आ चुके थे।

**पहली सभा रात 8 बजे :–** श्रीमान बलबहादुर जी ने आए यात्री गण का स्वागत किया और उन्हें धन्यवाद दिया।

इस सभा में नेचर के नियमों का विषय था। यह नियम चारों जगतों में काम करते हैं। सब में परिवर्तन इन नियमों के अनुसार होता है। उसके बाद उन्होंने बताया कि सच्चा धर्म मनुष्य को उसकी परिचालक भाव शक्तियों का ज्ञान देता है। धर्म पाठ, जाप, सिमरण का नाम धर्म नहीं। अच्छी वा बुरी गतियां सम्बन्धों में ही होती हैं। निराली इस संगत में आकर जो भावों में परिवर्तन होता है उसके उदाहरण पेश किए। अपने आए परिवर्तन के लिए दिल के गहरे भावों से इस उच्च संगत का धन्यवाद किया।

**24 – 2 – 2018 :–** सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। उन्होंने विकास क्रम में पैदा हुए कारज का वर्णन करते हुए, गुरू गोबिन्द सिंह जी की भविष्य वाणी बताई "नेह कलंक जब आएगा, वह नया वाक्य सुनाएगा" विकास क्रम में देवात्मा को नेचर ने नेह कलंक के रूप में पैदा किया है। उनकी रोशनी, शिक्षा और कारज सब धर्मों से विलक्षण है। सब धर्मों ने ज़ोर लगाया परन्तु दुनिया में टकराहट और कड़वाहट बढ़ रही है। देवात्मा ने मनुष्य के दुखी होने के ठोस कारण बताए हैं। उन्होंने फरमाया है कि पहले आठ बुराईयां छोड़े बिना इन्सान, इन्सान कहलाने के भी योग नहीं। सभापति जी ने ईमानदारी, पवित्रता को गहराई से समझाने का यत्न किया। श्रद्धा, शुक्रगुज़ारी और दया भावना के विषय में बताया। इन के बिना कोई धर्म नहीं होता। जीवनी शक्ति वा आत्मा का ज्ञान अपनाने से धर्म आरम्भ होता है।

**24 – 2 – 2018 शाम 4 बजे:–** सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। उन्होंने बताया कि मनुष्य सुख का प्रेमी है और सुख अन्धेरा पैदा करते हैं। विश्व में देवात्मा के भीतर ऐसी ज्योति पैदा हुई है, जो इस अन्धेरे को दूर करती है। दूसरों के दुखों को जानने के लिए हमद्र्दी की ज्योति की आवश्यकता है। उपकारियों के उपकारों को देखने के लिए शुक्रगुज़ारी की और दूसरों के गुणों को देखने के लिए श्रद्धा की ज्योति की आवश्यकता है। देवात्मा की ज्योति पाकर अपराधी आत्मा अपने दोषों और अपराधों को बताने के लिए मजबूर हो जाते हैं और परिशोध द्वारा अपनी मैल धोते हैं। यह ज्योति देवात्मा के बिना कहीं उपलब्ध नहीं। इस ज्योति में ही आत्मा का भला वा बुरा दिखाई देता है। सच्चे धर्म को जानने के लिए देवात्मा के देव प्रभाव दायक मण्डल की आवश्यकता है।

**24 – 2 – 2018 रात 8 बजे :–** सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि हम अपने आपको नहीं जानते। हम दूसरों को कुछ न कुछ जानते हैं, इसी प्रकार दूसरे हमारे विषय में अधिक जानते हैं। हम सुख अनुरागी होने के कारण जब कोई

सुख पूरा नहीं होता, तो घृणा से भर उठते हैं और अपना पतन कर बैठते हैं। जब हमारी कोई इच्छा पूरी नहीं होती तो अपना सन्तुलन खो बैठते हैं।

श्रीमान बलदेव सिंह जी ने इस विषय को और स्पष्ट करते हुए बताया कि कैसे श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने अंह और नीच घृणा से कठिन साधनों द्वारा मोक्ष प्राप्त की। नीच घृणा से छुटकारा पाने के लिए देव प्रभाव अचूक दवाई हैं।

**25 – 2 – 2018 सुबह 9 बजे।** इस सभा में सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने वेदान्त की सम्बन्धों में उदासीन करने वाली शिक्षा का वर्णन करते हुए बताया कि इस पाप मूलक शिक्षा के कारण एक साधू ने अपनी मां से मिलने से इन्कार कर दिया। मां रो धोकर चली गई। पत्नी भी रोती चली गई, वह पुकारता रहा कि यह सब माया है।

देवात्मा की शिक्षा में बताया जाता है कि माता पिता का क्या स्थान है। स्वार्थ के कारण माता पिता के सम्बन्ध में बच्चों की बेरुखी बढ़ती जाती है। स्वार्थ का सम्बन्ध दोष पूर्ण है। स्वार्थ के कारण सन्तान द्वारा माता- पिता सताए, तड़पाए और यहां तक कि कई बार मौत के घाट भी उतार दिए जाते हैं। हमें शारीरिक, मानसिक वा हार्दिक योग्यताएं माता पिता से ही मिलती है। हमारे देश में औरंगजेब जैसे पिता को कैद करने वाले भी पैदा हुए हैं और जहांआरा जैसी बेटी भी पैदा हुई है, जिसने कुंवारी रहकर पिता की सेवा की। वसीयत में औरंगजेब़ ने लिखा था कि मैं एक मासूम बच्चा था, परन्तु पापों का बोझ लेकर मर रहा हूं। श्रवण कुमार जैसे बेटे भी इस देश में पैदा हुए हैं। एक एक पिता अपने बेटे को बचाने के लिए शेर के साथ भिड़ जाता है और सदा के लिए अपंग हो जाता है। माता-पिता का जन्म दाता, पालन कर्ता वा शिक्षा दाता रूप भूल कर जब कोई बच्चा यह कहता है आपने हमारे लिए क्या किया है, तो इससे बड़ी कृतघ्नता क्या हो सकती है। गुरू महाराज ने मुझे अपने माता-पिता दिखा दिए। माता के चरण दबाने लगा दिया, सेवा करने लगा, उसके लिए सदा सदा धन्यवादी हूं। और शुक्रगुज़ार जनों के उदाहरण प्रस्तुत किए। सारी सभा बहुत प्रभावशाली थी।

## भाव प्रकाश

**श्रीमान जगदीश जी :–** मेरे माता पिता ने तीन बार जन्म दिया है। जन्म देकर और फिर 2 बार बिमारी रूपी मौत के मुंह से निकालकर। रो रोकर वह दृश्य याद कर रहे थे। मेरी मां ने इस दर से जोड़कर मुझे अध्यात्मिक जन्म दिया। मैंने उन्हें बहुत धोखे दिए। मेरे पिता जैसे एक जन मिले, उनका नाम भी वही है, मैं उनकी सेवा करता रहता हूं। मेरे बच्चे भी मेरे माता पिता की फोटो को प्रणाम करते हैं। मैं कामना करता हूं कि मैं भी किसी बजुरग की सेवा कर सकूं।

**श्रीमान जगीर सिंह जी:–** महाराज ने माता पिता के सम्बन्ध में काफी होश दी है। मां के प्रति एक दोष सामने आ रहा है, उसका परिशोध करुंगा। मैंने मां के प्रति बहुत अपराध किए हैं, मैं बेशर्म हो गया था। मां से बिना पूछे पैसे बांट लिए, अब वह कमी पूरी करूंगा। मैं पापी, गुनाहगार हूं। मैं बेहोश न मरूं, सत्गुरू! आपके दर का भिख़ारी बना रहूं।

**श्रीमान सुन्दर लाल जी :–** मैंने मां का जितना अपमान किया है, वह यहां आकर बहुत सताता रहा। हम छ: बहन भाईयों को, कैसे पाला, वह उपकार अब सामने आ रहे हैं। मां का बहुत निरादर किया है। (मां के चरणों को याद करते हुए उनकी चीख़े निकल गई) पिता का थोड़ा रूप नज़र आता है। वह बिमार रहते थे। मैं बहन, भाईयों से अच्छा सम्बन्ध बनाकर

*Regd. Postal No.CHD /0077/ 2018-2020*
*Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88*

माता – पिता को परलोक में शान्ति दे सकता हूं।

**श्रीमान बूटा सिंह जी: –** सभाओं से बहुत लाभ हुआ है। मां ने गर्मी में हररोज़ शहर जाकर मेरी आंखें ठीक करवाई। पिता ने एक साधू से ईलाज करवाके मुझे जीवन दान दिया, मैं स्वार्थी उनसे घड़ी छुपा लेता था। बड़े भाई की कुर्बानियां नज़र आई हैं। उनको कई बार घृणा करता रहा हूं। महोत्सव के बाद सब भाईयों में सुलह करवाने की कोशिश की, परन्तु सफल नहीं हआ। और कोशिश करूंगा।

**श्रीमान मधू सूदन जी :–** यहां आकर बहुत लाभ हुआ है। सभाएं ऐसा लगता था कि मेरे ऊपर ही करवा रहे हैं। श्रीमान जी से भी कई बार दूर हो जाता हूं, परन्तु यह अपनी उदारता से निकट कर लेते हैं। पशु पक्षियों के सम्बन्ध में श्रीमान जी ने उच्च गतियां करवाई हैं। खेड़ा परिवार के भी बहुत उपकार हैं। मैं चाहता हूं कि अधिक से अधिक सत्संग कर सकूं।

**श्रीमान बलदेव सिंह जी मलेका :-** पिता के दुखों का वर्णन किया। पाकिस्तान से सब कुछ गंवाकर आए थे। मलेका। जमीन अलाट हुई, बंजर ज़मीन देखकर मां की मौत हो गई। पिता ने 300 किलोमीटर चलकर हमारे लिए बच्चत की, पैरों में छाले पड़ गए। इस दर ने ही सास माता के रूप में दिखाई है, और उनकी सेवा करवाई है। मैं शराब पीकर उल्टियां करता उस मां ने साफ की। मुझे देव समाज मिल गई, फिर उनका ईलाज करवाया। सास कहने लगी तुम मुझे पुत्र से भी प्यारे लगते हो। अधरंग में भी मुझे छाती से लगा लिया। मेरी धर्म पत्नी की भी सेवा में लगाया।

**श्रीमान गुरूमेल सिंह जी: –** एक बार अखण्ड पाठ में पाठी लेट हो गया, उसको बहुत बुरा भला कहा, उसका बेटा बिमार था। रात सभा में अपने ज़हर भरे शब्द याद आए और मैं सो नहीं सका! मैं बहुत जालिम हूं। इस ग़ल्ती के लिए मैं उस बच्चे को फल फ्रूट दूंगा। 100 रूपये उसको देकर दिल हल्का हुआ। अगर सभा न सुनता तो मैं यह नहीं कर सकता था।

**श्रीमान अनिल कुमार जी :–** सभा में बहुत लाभ होता है। इस जिन्दा संगत से जुडे रहने की आवश्यकता महसूस हुई है।

**श्रीमान जलधर जी :-** माता पिता के उपकार और गुण नज़र आए हैं। पिता जी में हमदर्दी है, हस्पताल में सेवा करते रहते हैं, अब उनके लिए फिर पैसे भेजता रहता हूं। उपकार बहुत पाए हैं, परन्तु नशुकरा हूं। अध्यापकों के, भाई साहिब के बहुत उपकार हैं यहा लाकर मेरी बहुत सेवा की है।

*श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री – देव – धर्म – मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने* ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21 – डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

**Book Posts**